

कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के बीच बच्चों के पालन-पोषण संबंधी रणनीतियों का तुलनात्मक अध्ययन

अर्चना कुमारी

शोधार्थी गृहविज्ञान विभाग
ल.ना.मि.वि.वि.कामेश्वरनगर दरभंगा-बिहार

सार

यह शोध पत्र कामकाजी महिलाओं और गैर-कामकाजी महिलाओं के बीच बच्चों के पालन-पोषण की रणनीतियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना है कि, कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाएँ बच्चों के पालन-पोषण में कौन-सी प्रमुख रणनीतियाँ अपनाती हैं। और इन रणनीतियों का बच्चों के विकास पर कौन-कौन से प्रभाव पड़ता है। शोध में 6-12 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों की कामकाजी और गैर-कामकाजी माताओं पर यह अध्ययन सर्वे विधि पर आधारित है। परिणाम दर्शाते हैं कि दोनों समूहों की माताएँ अपने-अपने संसाधनों, समय प्रबंधन और सामाजिक समर्थन के अनुसार भिन्न रणनीतियाँ अपनाती हैं।

मुख्य बिंदु - पालन-पोषण, कामकाजी महिलाएँ, गैर-कामकाजी महिलाएँ।

प्रस्तावना

बच्चों का पालन-पोषण किसी भी समाज की बुनियादी सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से भावी पीढ़ी के व्यक्तित्व, व्यवहार, मूल्य और सामाजिक दक्षताओं का निर्माण होता है। परिवार किसी भी बच्चे का प्रथम प्राथमिक पाठशाला होता है और माता की भूमिका इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। भारतीय समाज में परंपरागत रूप से महिलाओं को बच्चों के पालन-पोषण की मुख्य जिम्मेदारी सौंपी जाती रही है। किंतु वर्तमान सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों, शहरीकरण, शिक्षा के प्रसार और महिला सशक्तिकरण के परिणामस्वरूप महिलाओं की कार्य-भागीदारी में निरंतर वृद्धि हुई है। कामकाजी महिलाओं की बढ़ती संख्या ने पारिवारिक संरचना, कार्य के दायित्वों के बँटवारे ने पालन-पोषण की पारंपरिक अवधारणाओं को चुनौती दी है। एक ओर कामकाजी महिलाएँ समय की सीमाओं, कार्य-दबाव और दोहरी भूमिका घर और कार्यस्थल का सामना करती हैं, तो वहीं दूसरी ओर गैरकामकाजी महिलाएँ अपेक्षाकृत अधिक समय बच्चों के साथ बिताने में सक्षम होती हैं। पालन-पोषण की रणनीतियाँ केवल बच्चों की दैनिक देखभाल तक सीमित नहीं होतीं, बल्कि इनमें अनुशासन, भावनात्मक समर्थन, शैक्षिक मार्गदर्शन, समय-प्रबंधन, सामाजिक मूल्यों का संप्रेषण तथा व्यवहारिक नियंत्रण जैसी अनेक प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं।

काम करने वाली माताएँ दो प्रकार की होती हैं: कामकाजी महिलाएँ और गैर-कामकाजी महिलाएँ। अधिकांशतः कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों को समय देती हैं, भले ही वह मात्रात्मक रूप से कम हो, लेकिन गुणात्मक रूप से अधिक होता है। जबकि गैर-कामकाजी महिलाएँ घरेलू काम करती हैं और न केवल अपने बच्चों की देखभाल करती हैं, बल्कि परिवार के सभी सदस्यों का भी ध्यान रखती हैं। विभिन्न शोधों से यह स्पष्ट है कि माता-पिता की उपलब्धता, पारिवारिक संसाधन और सामाजिक समर्थन बच्चों के संज्ञानात्मक एवं भावनात्मक विकास को प्रभावित करते हैं।

हाल के भारतीय अध्ययनों 2018–2024 से यह स्पष्ट होता है कि “माताओं की कार्य-स्थिति बच्चों के पालन-पोषण की रणनीतियों को प्रभावित अवश्य करती है, किंतु यह प्रभाव एकरैखिक न होकर बहुआयामी है।”

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक कॉर्पोरेशन एण्ड चाइल्ड डेवलपमेंट (2018) की रिपोर्ट के अनुसार “कामकाजी माताएँ बच्चों की दैनिक दिनचर्या को अधिक संरचित रूप में संचालित करती हैं, जबकि गैर-कामकाजी माताएँ भावनात्मक निकटता और प्रत्यक्ष देखभाल पर अधिक बल देती हैं।”

देसाई और अन्दिस्त (2019) ने यह निष्कर्ष निकला कि “भारतीय परिवारों में महिलाओं की रोजगार स्थिति और बच्चों के सामाजिक विकास के बीच संबंध का अध्ययन करते हुए पाया कि माताओं की शिक्षा और पारिवारिक समर्थन प्रणाली बच्चों के परिणामों में निर्णायक भूमिका निभाती है।”

रॉव और रेड्डी (2020) के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि “कामकाजी माताओं के बच्चे समस्या-समाधान और आत्मनिर्भरता में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम पाए गए। महामारी के बाद किए गए अध्ययनों में पालन-पोषण रणनीतियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए।”

गुप्ता और खन्ना (2021) ने बताया कि “वर्क-फ्रॉम-होम की स्थिति में कामकाजी माताओं ने बच्चों के साथ सहभागिता बढ़ाई, जिससे शैक्षिक सहयोग और भावनात्मक समर्थन में वृद्धि हुई। वहीं, गैर-कामकाजी माताओं में मानसिक थकान और भूमिका-अधिभार की समस्या उभरकर सामने आई है।”

पोडुवल और पोडुवल (2009) “कामकाजी मां को ऐसी महिला के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो अपने करियर के साथ-साथ बच्चे के पालन-पोषण की अतिरिक्त जिम्मेदारी भी निभाती है। इस व्यापक शब्द के अंतर्गत कामकाजी महिलाओं की दो अलग-अलग श्रेणियां शामिल हो सकती हैं: घर से काम करने वाली गृहिणी और घर से दूर रहकर काम करने वाली महिला जो मातृत्व कर्तव्यों को भी बखूबी निभाती है। माताओं के रोजगार का बच्चों के पालन पोषण पर प्रभाव कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक होता है। कामकाजी माता आधुनिक नारीत्व का प्रतीक है। आधुनिक कार्य वातावरण को

इस कामकाजी वर्ग की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, पुरुष प्रधानता से हटकर लैंगिक समानता और पालन-पोषण के अनुकूल व्यवहार की ओर अग्रसर होना चाहिए। संयुक्त परिवार और एकल परिवार दोनों को कामकाजी माताओं की आवश्यकताओं के अनुरूप ढलना होगा ताकि एक स्वस्थ परिवार का विकास हो सके।”

अध्ययन की आवश्यकता-

भारतीय संदर्भ में कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाओं की पालन-पोषण रणनीतियों पर तुलनात्मक एवं डेटा-आधारित अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन न केवल पारिवारिक अध्ययन और बाल विकास के क्षेत्र में सैद्धांतिक योगदान देगा, बल्कि नीति-निर्माताओं, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए भी व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा।

अध्ययन का उद्देश्य:

1. यह पता लगाना कि कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाएँ बच्चों के पालन-पोषण में कौन-सी प्रमुख रणनीतियाँ अपनाती हैं।
2. बच्चों के विकास पर इन रणनीतियों के संभावित प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

शोध अभिकल्प: वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक

नमूना आकार: 200 जिसमें 100 कामकाजी महिलाएं, 100 गैर-कामकाजी महिलाएं

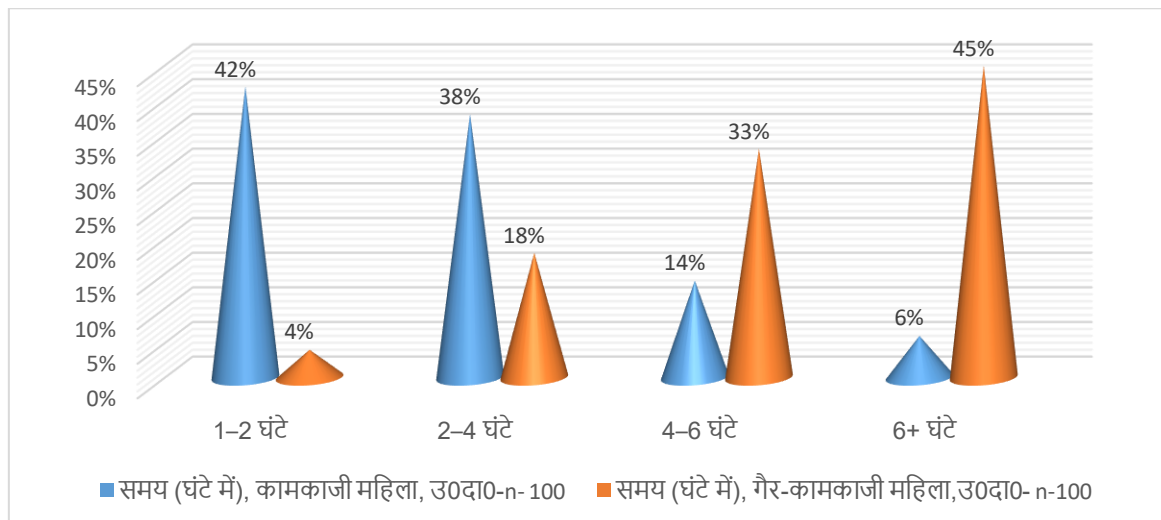
नमूना चयन: स्तरीकृत यादृच्छिक विधि

उपकरण: संरचित प्रश्नावली

सांख्यिकीय तकनीक: औसत, प्रतिशत

परिणाम एवं विश्लेषण

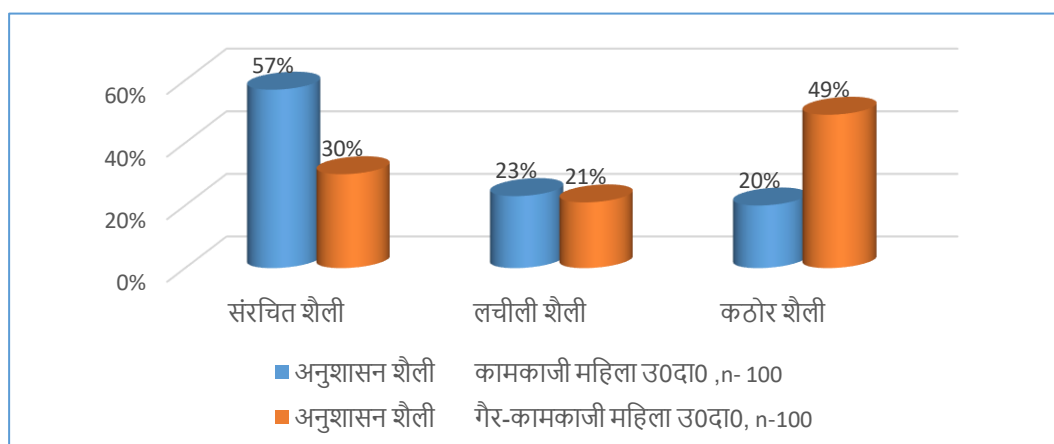
चित्र सं0-1 बच्चों के साथ बिताया गया दैनिक समय (घंटे में)



चित्र सं०-1 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 42 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों को सर्वाधिक समय 1-2 घंटे, 38 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों को सर्वाधिक समय 2-4 घंटे प्रतिदिन समय दे पाती है, जबकि सर्वाधिक 45 प्रतिशत गैर-कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों को सर्वाधिक समय 6 घंटे से अधिक समय तथा उसके कम 33 प्रतिशत गैर-कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों को सर्वाधिक समय 4-6 घंटे प्रतिदिन समय दे पाती है

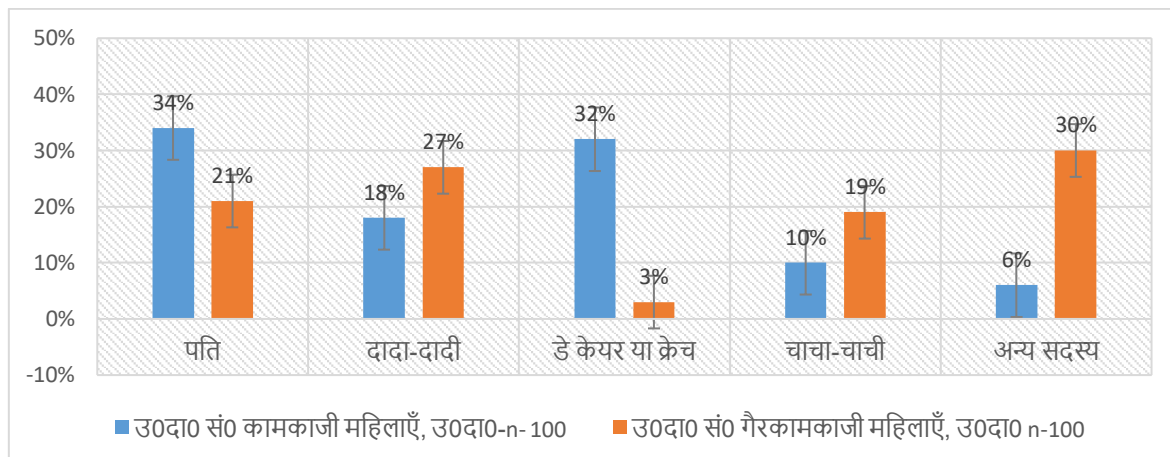
उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाओं की अपेक्षा गैर-कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों को अधिक समय देती हैं

चित्र सं०-2 कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाएँ बच्चों के पालन-पोषण में अपनायी गयी अनुशासन शैली



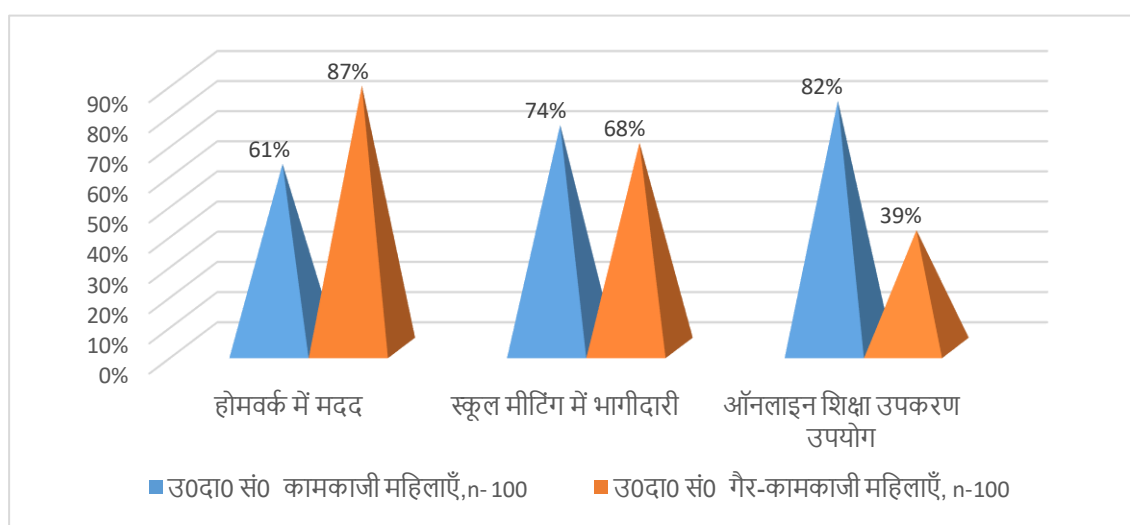
चित्र सं0-2 से स्पष्ट है कि सबसे अधिक 57 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ बच्चों के पालन-पोषण में संरचित योजनाबद्ध रणनीतियों को प्राथमिकता देती हैं। जबकि सर्वाधिक 49 प्रतिशत गैर-कामकाजी माताएँ अनुशासनात्मक कठोर रणनीति को प्राथमिकता देती है।

चित्र सं0-3 बच्चों के पालन-पोषण में परिवार के सहयोग की रणनीति



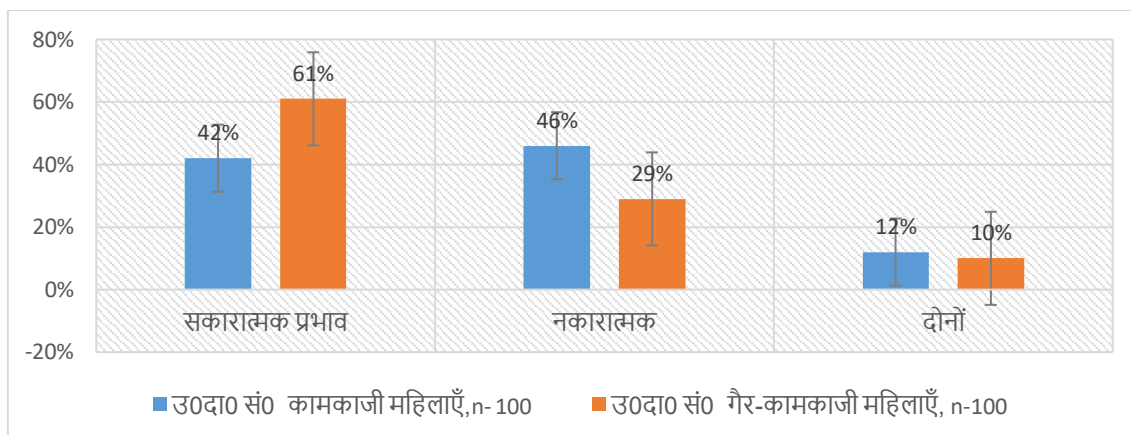
चित्र सं0-3से स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाएँ बच्चो के पालन पोषण के परिवार में सर्वाधिक सहयोग पति का और उसके बाद डे केयर या क्रेच की सहायता लेती है उसके बाद दादा-दादी,चाचा- चाची और परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग लेती है, जबकि गैर-कामकाजी महिलाएँ व्यक्तिगत सहायता पर निर्भर रहती हैं। उसके बाद परिवार के अन्य सदस्यों का और दादा-दादी की सहायता बच्चो के पालन पोषण में सर्वाधिक लेती है।

चित्र सं0-4 बच्चों के पालन-पोषण में अपनायी गयी रणनीतियों का शिक्षा पर प्रभाव



चित्र सं0-4से स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाएँ समय की कमी के कारण अधिक योजनाबद्ध पालन-पोषण रणनीतियाँ अपनाती हैं। इनकी पूरी कोशिश होती है कि वे अपने बच्चे के पालन पोषण में कोई कमी न करें इसलिए वे होमवर्क स्कूल मीटिंग, ऑनलाइन शिक्षा के लिए डिजिटल उपकरणों का अधिक उपयोग करती हैं, जबकि गैर-कामकाजी महिलाएँ व्यक्तिगत सहायता पर निर्भर रहती हैं।

चित्र सं0-5 बच्चों के पालन-पोषण में अपनायी गयी रणनीतियों का बच्चों के व्यवहार पर प्रभाव



चित्र सं0-2 कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाओं द्वारा बच्चों के पालन-पोषण में अपनायी गयी रणनीतियों का सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ता है।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि चाहे कामकाजी महिला हो या गैर-कामकाजी बच्चों के पालन-पोषण में उचित रणनीतियों का पालन करना चाहिए।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कामकाजी महिलाओं के पास समय की सीमाएँ होती हैं, परंतु वे गुणवत्ता-आधारित पालन-पोषण रणनीतियाँ अपनाती हैं। दूसरी ओर गैर-कामकाजी महिलाएँ समय-आधारित रणनीतियों में अधिक सक्षम पाई गईं। दोनों समूहों में बच्चों के प्रति प्रतिबद्धता समान रूप से देखी गई। कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाओं की पालन-पोषण रणनीतियों में कुछ भिन्नताएँ अवश्य हैं, परंतु दोनों का लक्ष्य बच्चों का सर्वांगीण विकास ही है। सामाजिक समर्थन और लचीली कार्य नीतियाँ कामकाजी महिलाओं के पालन-पोषण को और अधिक प्रभावी बना सकती हैं। क्योंकि पालन-पोषण की रणनीतियों का सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ता है। इसलिए उचित रणनीतियों को अपनाना चाहिए।

संदर्भ सूची

- Poduval, J., & Poduval, M. (2009). Working mothers: how much working, how much mothers, and where is the womanhood?. *Mens sana monographs*, 7(1), 63–79.
- Patel Patel(2024) A Comparative Study to Assess the Emotional problems among Children of working mothers and Nonworking mothers studying in selected schools of Mehsana District. *A and V Pub Journal of Nursing and Medical Research.*;3(4):133-5.
- Nigar, P. S. N., & Karim, A. R. (2019). Parenting Style of the Working and Non-working Mothers. *Psyche of Asian Society*, 349.
- Baumrind, D. (1991). The influence of parenting style on adolescent competence and substance use. *Journal of Early Adolescence*, 11(1), 56–95.
- Bornstein, M. H. (2015). *Handbook of parenting: Volume 1–5*. Psychology Press.
- Desai, S., & Andrist, L. (2019). Gender scripts and age at marriage in India. *Demography*, 56(2), 667–694.
- Gupta, A., & Khanna, P. (2021). Parenting during COVID-19: Challenges faced by working mothers in India. *Indian Journal of Social Work*, 82(3), 345–360.
- Kumar, R., & Sharma, S. (2019). Parenting practices among working and non-working mothers in urban India. *Indian Journal of Social Research*, 60(2), 245–260.
- Mehta, N., & Patel, R. (2024). Digital parenting practices among Indian mothers. *Journal of Child and Family Studies*, 33(1), 112–125.
- NIPCCD. (2018). *Parenting practices in contemporary Indian families*. New Delhi: Ministry of Women and Child Development.
- Rao, S., & Reddy, K. (2020). Maternal employment and child development outcomes in India. *Journal of Family Studies*, 26(4), 512–528.
- Sharma, M., & Verma, P. (2022). Parenting styles and discipline strategies among Indian mothers. *Indian Journal of Psychology*, 97(1), 88–102.
- Singh, A., & Kaur, H. (2021). Family support and parenting stress among working women. *Journal of Indian Academy of Applied Psychology*, 47(2), 210–222.
- UNICEF India. (2020). *Parenting in the time of COVID-19*. New Delhi.
- Verma, S. (2020). Impact of maternal employment on children's behavior. *Indian Journal of Child Development*, 12(1), 34–47.
- WHO. (2021). *Guidelines on parenting and child well-being*. Geneva: World Health Organization.
- Belsky, J. (1984). The determinants of parenting: A process model. *Child Development*, 55(1), 83–96.
- Kaur, R., & Patel, S. (2020). Digital parenting practices among working mothers in India. *Indian Journal of Psychology*, 12(3), 44–59.